चींटी और टिड्डा

ईसप की कहानी

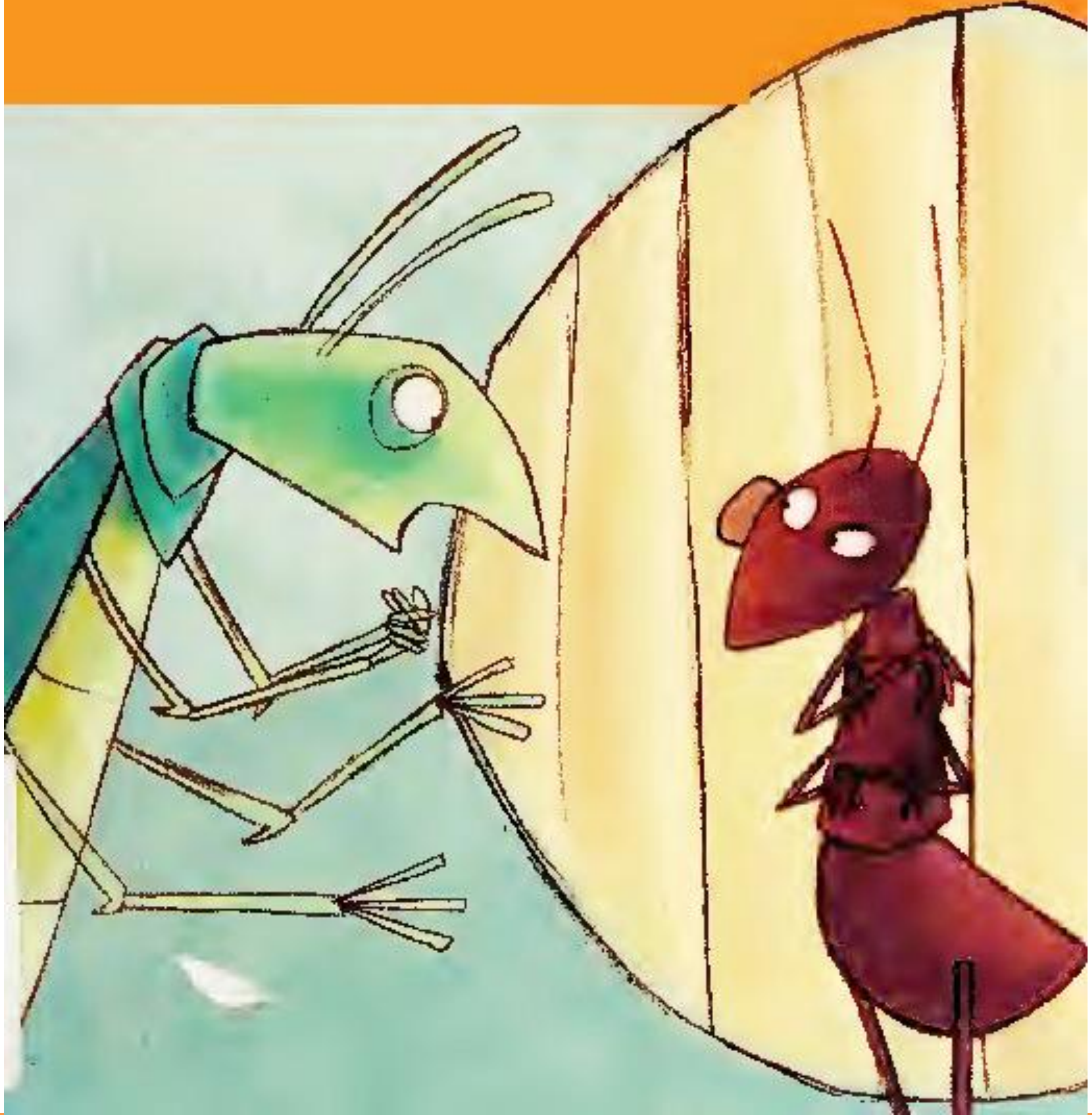

चींटी और टिड्डा

ईसप की कहानी

एक बड़े मैदान में चींटी,
एक टिड्डे के पास रहती थी.

चींटी गर्मियों में हर दिन सुबह जल्दी उठती थी. वो बहुत मेहनती थी.

सुबह से लेकर रात तक चींटी भोजन खोजती थी. वो उस भोजन को अपने घर में संजोकर रखती थी.

जबकि हर सुबह, टिड्डा जागते ही अपना गाना शुरू कर देता था.

टिड्डे की आवाज अच्छी थी. उसे संगीत का अभ्यास करना पसंद था. वो दिन भर नाचता-गाता रहता था.

"आओ मेरे साथ गाओ," टिड्डा, हर बार चींटी को देखकर कहता था.

"नहीं, मेरा काम अभी बाकी है," चींटी हमेशा कहती थी.

"कम-से-कम एक गीत के लिए तो समय निकालो?" टिड्डे ने भीख माँगी. "देखो, कितना प्यारा दिन है!"

लेकिन मेहनती चींटी काम करती रही.

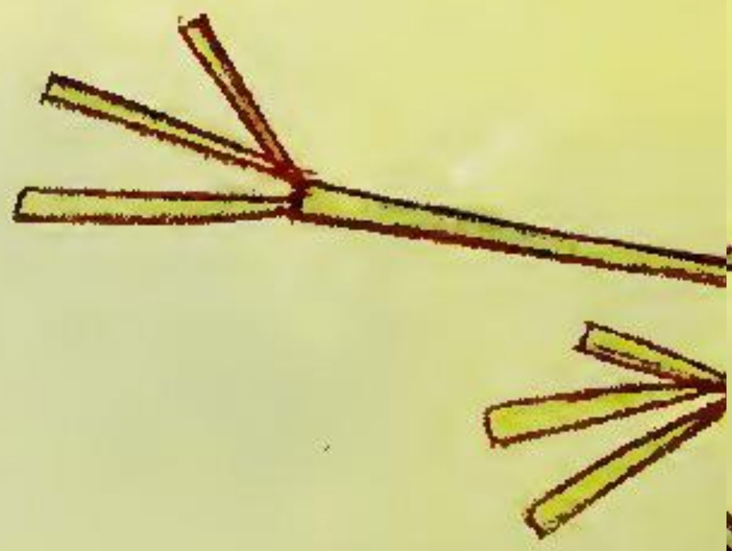

बरसात के दिनों में टिड्डा घर पर ही रहता था.

बोर होने से बचने के लिए वो नए-नए गाने रचता था.

लेकिन चींटी पूरे दिन काम करती थी. वो सर्दियों के मौसम लिए भोजन जमा करने में लगी रहती थी.

एक सर्दी के दिन, टिड्डा भोजन की तलाश में बाहर निकला. लेकिन उसे खाने को कुछ भी नहीं मिला.

टिड्डे ने अपने पड़ोसी का दरवाजा खटखटाया. उसने चींटी से कुछ खाना मांगा.

चींटी ने कहा, "मैंने पूरी गर्मियों भर काम किया, और तुमने पूरी गर्मी गाने में बिताई."

"अब तुम सर्दियों भर खुद को गर्म रखने के लिए नाच सकते हो."

"लेकिन तुम्हारे पास बहुत सारा भोजन जमा है," टिड्डे ने कहा.

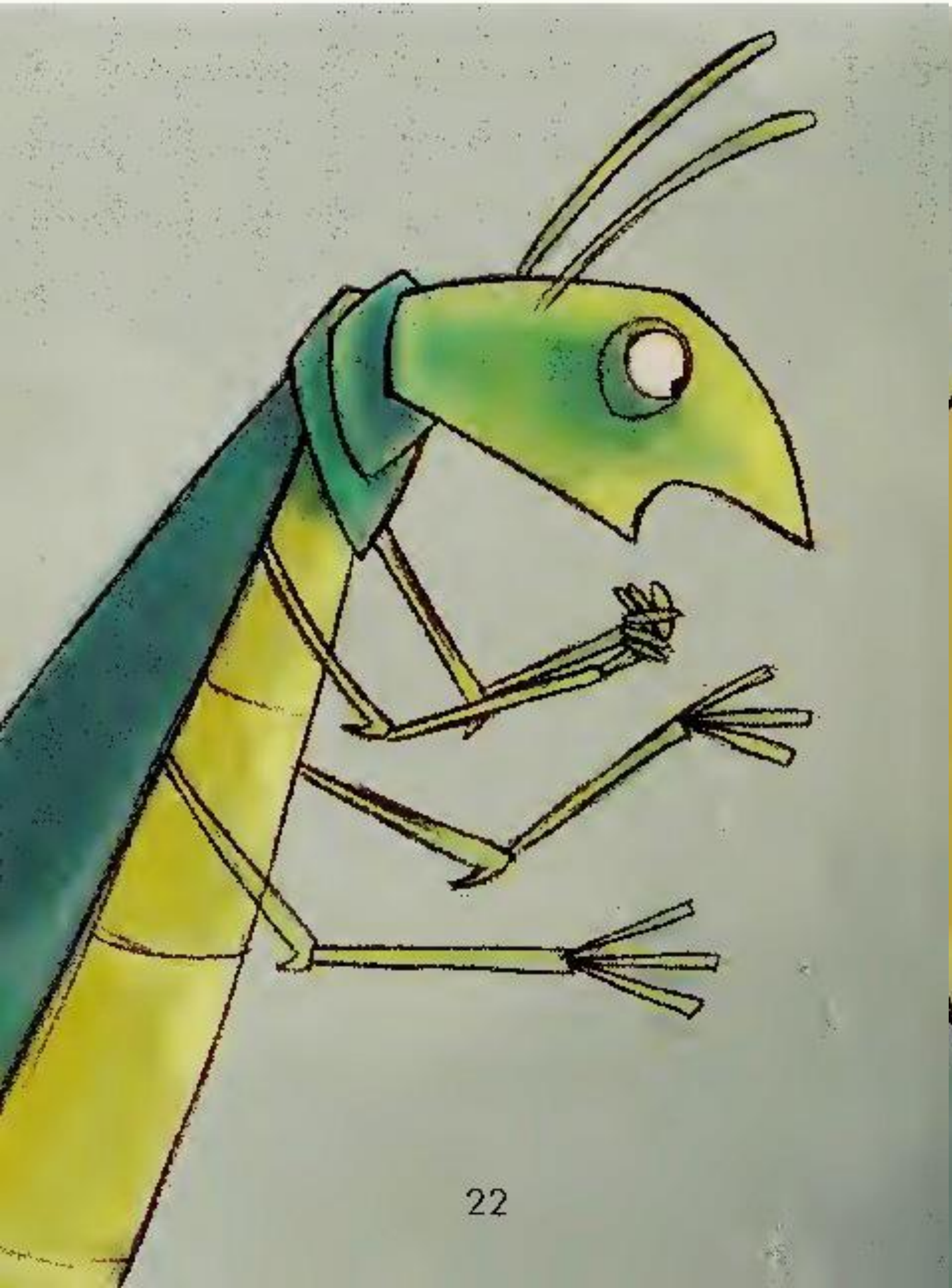

"क्योंकि मैंने पूरी गर्मियों भर सर्दियों की तैयारी की थी," चींटी ने उत्तर दिया.

"देखो, खेलने का समय और काम करने, दोनों का समय होता है," चींटी ने कहा.

समाप्त